<table>
<tr><td colspan="5"><u>उद्देश्य</u> - इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वरलिपि पद्धति, गायन शैलियों एवं उसके घरानों व राग शास्त्र का विस्तृत ज्ञान देना और संगीत ग्रन्थों व संगीतज्ञों के जीवन से अवगत कराना है ।संगीत(गायन)</td></tr>
<tr><th>क्र0 सं0</th><th>कोर्स का नाम</th><th>कोर्स कोड</th><th>अंक</th><th>श्रेयांक</th></tr>
<tr><td>1</td><td>गायन - रागों और तालों का अध्ययन I</td><td>एम0पी0ए0एम0वी0 - 102</td><td>100</td><td>4</td></tr>
<tr><td rowspan="4">प्रथम खण्ड</td><td>भारतीय स्वरलिपि पद्धति एवं गायन शैलियाँ</td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td></tr>
<tr><td>*इकाई 1 -स्वरलिपि पद्धतियों का अध्ययन एवं तुलना।</td></tr>
<tr><td>*इकाई 2 -गायन शैलियों (धमार, ख्याल एवं टप्पा) की उत्पत्ति एवं विकास।</td></tr>
<tr><td>*इकाई 3 -ख्याल के घराने।</td></tr>
<tr><td rowspan="4">द्वितीय खण्ड</td><td>*रागों का विस्तृत अध्ययन</td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td></tr>
<tr><td>इकाई 1 -राग निर्माण, वादी, सम्वादी, अनुवादी एवं विवादी स्वर का महत्व।</td></tr>
<tr><td>इकाई 2 -राग एवं रागिनी की व्याख्या, रागों का समय चक्र, ग्राम और मूर्च्छना।</td></tr>
<tr><td>इकाई 3 -पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण वर्णन, तुलना एवं स्वर समूह द्वारा राग पहचानना।</td></tr>
<tr><td rowspan="4">तृतीय खण्ड</td><td>संगीतज्ञों का जीवन परिचय, ग्रन्थ अध्ययन एवं निबंध लेखन</td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td></tr>
<tr><td>इकाई 1 - संगीतज्ञों (राजा भइया पूंछवाले, उ0 बड़े गुलाम अली, पं0 मणिराम, पं0 बी0आर0 देवधर वपं0 रामाश्रय झा) का जीवन परिचय एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान।</td></tr>
<tr><td>इकाई 2 -संगीत के प्रसिद्ध ग्रन्थों (नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी, स्वरमेलकलानिधि व संगीत दर्पण) का अध्ययन।</td></tr>
<tr><td>इकाई 3 -संगीत संबंधी विषयों पर निबंध लेखन।</td></tr>
<tr><td rowspan="4">चतुर्थ खण्ड</td><td>*स्वरलिपि वताललिपि में लिखना</td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td><td rowspan="4"></td></tr>
<tr><td>इकाई 1 -पाठ्यक्रम के रागों की बन्दिशों (विलम्बित ख्याल, मध्यलय ख्याल, तान वतराना) को लिपिबद्ध करना।</td></tr>
<tr><td>इकाई 2 -पाठ्यक्रम के रागों में ध्रुवपद एवं धमार (दुगुन, तिगुन वचौगुन) लयकारी सहित लिपिबद्ध करना।</td></tr>
<tr><td>इकाई 3 -पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन वआड) सहित लिपिबद्ध करना।</td></tr>
<tr><td colspan="5">राग - श्यामकल्याण , मारू विहाग , अहीर भैरव , बागेश्री , पूरिया कल्याण , बैरागी , बिहागडा , भैरव , केदार व मालकौंस
ताल - तीनताल , झपताल , एकताल , आडाचारताल , रूपक , चारताल , धमार व 9 मात्रा की ताल</td></tr>
<tr><td colspan="5">सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -
1.वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 । 2. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।
3. डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग,राग विशारद(दोनों भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।
4. पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।
5. श्री विनायक राव पटवर्धन, राग विज्ञान(दोनों भाग)।</td></tr>
</table>